पर्यावरणीय आचारनीति

Sangeeta Kumari
Post Graduate (B.H.U)
U.G.C Net Qualified
Research Scholar (P.U)

दर्शनषास्त्र की एक षाखा है नीतिषास्त्र जिसके अन्तर्गत प्रयोगात्मक नीतिषास्त्र का अध्ययन किया जाता है। प्रयोगात्मक नीतिषास्त्र एक ऐसा षास्त्र है जिसका संबंध सिर्फ मनुष्यों से नहीं, बल्कि मनुष्य जीवों तथा भौतिक वस्तुओं से भी होता है। मनुष्येत्तर जीवों में सभी प्रकार के मनुष्येतर प्राणधारी तथा सभी प्रकार के पेड़–पौधे सम्मिलित रहते है। परन्तु मनुष्य को छोड़कर अन्य किसी प्रकार का जीव नैतिक कर्ता नहीं हो सकता। अतः किसी प्रकार के जीवन की आवष्यकता की पूर्ति का भार मनुष्य पर ही पड़ता है चुँकि यह निर्विवाद है कि विष्वस्तरीय सामंजस्य का होना एक अस्तित्वपरक अनिवार्यता है। और चुँकि इस तरह यह एक आदर्ष है और इसी कारण सभी कार्यो का नियामक भी, इसलिए इस आदर्ष का चरितार्थ होना नैतिकता का ही क्रियान्वयन है और इस आदर्ष के चरितार्थ होने की आवष्यकता को हम नैतिकता की अनिवार्यता भी कह सकते हैं। अतः यदि मनुष्य किसी प्रकार के जीवधारियों या अस्तित्वधारकों की आवष्यकताओं की पूर्ति नहीं कर रहा होता है, तो यह उसकी गफलन है। अतः उसे उनकी आवष्यकताओं की पूर्ति अवष्य करनी चाहिए। ऐसा करना उसका कर्तव्य हो जाता है। चुँकि ऐसे सभी कर्तव्य पर्यावरण के विभिन्न अंगो से ही संबंधित रहते हैं, इसलिए वे सभी पर्यावरणीय आचारनीति के ही अंग होते है। पर्यावरणीय अचारनीति कोई नई कल्पना नहीं है परन्तु यह सत्य है कि पूर्व की अपेक्षा अब इस आचारनीति पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है इसका कारण यह है कि अब इस आचारनीति के व्यतिक्रमण के दुष्परिणाम लोगों को जन्म से ही सताने लगे है। पर्यावरणीय आचारनीति के प्रमुख अंग है– पषुजगत परक, वनस्पतिजगत परक तथा भौतिक जगत परक।

पशुजगतपरक आचारनीति –

पशु नैतिक कर्ता नहीं होते है। इसलिए इस आचारनीति में मनुष्यों द्वारा पषुओं के प्रति किए गए व्यवहार की विवेचना होती है। इस संबंध में प्राचीन काल से ही दो तरह की विचारधाराऐं अस्तित्व में रही है। हिन्दू संस्कृति का ष्अहिंसा परमो धर्मःष् का विचार तो अत्यंत ही विख्यात है। पर हिंदू संस्कृति में ही दूसरी ओर उपर्युक्त विचार का विरोधी विचार भी पाया जाता है और यह बिल्कुल हिंसात्मक है। वैदिक कर्मकांड के अनुसार ''यज्ञार्थ पषवः श्रेष्ठा।'' अर्थात् यज्ञ के लिए पषु श्रेष्ठ है। यही कारण है कि हिन्दू समाज मे छागबलि, महिषबलि, कपोतबलि, आदि अनेक प्रकार की बलियाँ व्यापक रूप से प्रचलित है। इस प्रकार हिन्दू संस्कृति में ये दोनों परस्पर विरोधी विचार वर्तमान है। पाष्चात्य संस्कृति में भी जैव जगत के प्रति हिंसात्मक तथा अहिंसात्मक दोनों तरह के व्यवहार किये जाते है।

वर्तमान स्थिति यह है कि प्रत्येक दिन संसार भर में करोड़ों पशु मनुष्य के भोजन के लिए मारे जाते है। और फिर वे बहुत ही अधिक संख्या में वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए भी मारे जाते है। पीटर सिंगर लिखते है –'' संयुक्त राज्य के कृषि विभाग के कार्यालय आंकड़ों के अनुसार करीब–करीब 1,40,000 कुत्ते तथा 42,000 बिल्लियाँ प्रत्येक वर्ष संयुक्त राज्य की प्रयोगषालाओं में मारे जाते है, और इनसे कम लेकिन फिर भी बड़ी संख्या में प्रत्येक विकसित राष्ट्र में ऐसे ही प्रयोग किये जाते हैं।'' इस तरह से मौत के षिकार केवल कुत्ते एव बिल्लियाँ ही नहीं होते वरन अन्य जानवर भी होते है, जैसे गाय, बैल, सूअर, भेड़, बकरे, मुर्गे , मछलियाँ आदि–आदि।

पषुओं और मनुष्यो के बीच बौद्विक रूप से समानता नहीं होते हुए भी एक समानता तो रहती ही है और वह है दोनों में संवेदनषीलता का विद्यमान होना और फिर दोनों मे अपने अस्तित्व को कायम रखने की प्रवृति भी रहती है। अन्तर सिर्फ यह है कि मनुष्यों की यह प्रवृति चेतन रूप भी ले सकती है। अतः समानता के आधार पर किसी भी कारण से पषु हत्या उपर्युक्त नहीं है।

उपयोगितावादी सिद्वांत मानव हित या सुख को ध्यान में रखकर जानवरो की हत्या को उचित करार देता है। परन्तु इस तरह के विचार को 'अधिमानता उपयोगितावाद' का नाम दे सकते हैं। परन्तु यह अंतिम रूप से एक नैतिक आदर्ष नहीं हो सकता क्योंकि यहाँ किसी न किसी रूप मे स्वार्थपूर्ति वर्तमान रहती है। उपयोगितावादी मिल ने यह स्वीकार कर लिया था कि उपयोगितावाद को किसी तरह से निकृष्ट होने नहीं दिया जा सकता। अतः उपयोगितावाद के सिद्धांत के आधार पर पशु–हत्या का विचार स्वीकारा नहीं जा सकता।

सिंगर के अनुसार मनुष्य को जानवरों की तुलना में अधिमानता प्राप्त है। अतः यदि परिस्थिति ऐसी हो जाए मनुष्य को अपने जीवन की सुरक्षा के लिए जानवरों के माँस का भोजन करना जरूरी हो जाए तो वह पषु हत्या कर सकता है। इस प्रकार विषेष परिस्थिति में जानवरों की हत्या को नैतिक वैद्यता प्रदान कर सकते हैं। जब कोई हाथी पागल हो जाता है और मनुष्य को रौंदकर मारने लगता है तो उसे मार डालना नैतिक रूप से बाध्य होता है। विषेष परिस्थिति में मनुष्य की अनुकंपा मृत्यु तथा मानव भ्रूण की हत्या भी विहित हो जाती है। अतः विषेष परिस्थिति में तथा केवल विषेष परिस्थिति में ही पषु हत्या को नैतिक वैद्यता मिल सकती है।

वनस्पतिजगत परक आचारनीति –:

हिन्दू संस्कृति में पंच महायज्ञ का बहुत अधिक महत्व है। उन पाँच महायज्ञों में भूतयज्ञ भी एक है। इस यज्ञ में विभिन्न जीव–जन्तुओं के साथ–साथ वृक्षों को भी अन्न समर्पित किया जाता है। इस तरह हिन्दू संस्कृति में बिल्कुल स्पष्ट रूप से वनस्पतियों की गरिमापूर्ण स्थिति स्वीकार की गई है। इस संस्कृति में विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधों को देवताओं के रूप में पूजना तो आम बात है। पेड़ों में पीपल

और पौधों में तुलसी को पवित्र स्थान प्राप्त है। गीता में कृष्ण कहते हैं कि पेड़ों में पीपल वृक्ष वे स्वयं ही है।

पाष्चात्य विचारकों ने भी वनस्पतिजगत की आंतरिक मूल्यवता को स्वीकार किया है। सिंगर के अनुसार, समसामायिक अमेरिकन दार्षनिक पॉल टेलर ने अपनी पुस्तक ''रेस्पेक्ट फॉर नेचर'' में कहा है कि सभी जीव अपने ढ़ंग से अपना कल्याण सिद्ध करने में लगे रहते है। यदि हम इस बात को समझ ले, तो हम अन्य जीवों को आत्मवत् ही मानने लगेगे और तब हम उनको भी उसी तरह मूल्यवान समझना षुरू कर देगें जिस प्रकार हम स्वयं को मूल्यवान समझते है।

वनस्पतिजगत का केवल मनुष्यों एव पषुओं की आवष्यकतानुसार उपयोग में लाया जाना जरूरी है क्योंकि वनस्पतिजगत, अन्य जगत के समान ही अपने आप में महत्व सम्पन्न होता है। सारा विष्व अपने सभी अंगों के साथ एक अत्यंत विलक्षण संतुलन पर ही कायम रहता है। किसी भी एक अंग के अधिक परिवर्तित हो जाने से वह संतुलन बिगड़ सकता है। और तब किसी भी अंग का सुरक्षित रह पाना असंभव हो सकता है, और तब मनुष्यों को भी इसके दुष्परिणाम भुगतने पड़ सकते है। अतः यह मनुष्यों का नैतिक दायित्व हो जाता है कि वह ऐसा कुछ भी ना करे जिससे कि वैष्विक संतुलन बिगड़ जाने की सम्भावना हो। यह बहुत खुषी की बात है कि आज लोग अंधाधुंध वन–कटाई पर एतराज कर रहे हैं। और लोग बहुत बढ़–चढ़ कर जैविक आचारनीति की बात करने लगे है। लोगों में वनस्पतिजगत् की सुरक्षा और महत्व के प्रति जागरूकता आई है।

भौतिक पर्यावरणपरक आचारनीति –:

पूरा ब्राह्मांड ही एक संतुलित संगठन है। यदि वनस्पतिजगत उसका एक महत्वपूर्ण अंग है, तो भौतिक जगत की भी महत्वपूर्णता से इंकार नहीं किया जा सकता। और भौतिक जगत भी संरक्षण का उतना ही हकदार है जितना कोई दूसरा अंग। ब्रह्मांड एक समष्टि है और उसमें भौतिक जगत् की भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः हमे इस जगत को भी समूचित सम्मान देना चाहिए और ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए जिससे इसके प्राकृतिक रूप से कोई विकृति आए। जिस तरह पषुजगत और वनस्पतिजगत के संदर्भ में उनकी अपनी आंतरिक मूल्यवता होती है, उसी तरह भौतिक जगत के संदर्भ में भी उसकी अपनी आंतरिक मूल्यवता होती है। भौतिक जगत के प्रति कर्तव्य का निर्वाह न केवल उसके अस्तित्व के आंतरिक मूल्य के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए होता है, बल्कि उसकी उपयोगिता के कारण भी उसे यथासंभव सुरक्षित रखने एवं विकृत नहीं होने देने के लिए भी आवष्यक है।

आज मनुष्य अनेक प्रकार के प्रदूषण पैदा करके अनेक प्रकार से भौतिक पर्यावरण को विकृत कर रहे है। आज विभिन्न प्रकार के उधोगों को चलाने के लिए कोयला, खनिज तेल, आदि का व्यवहार इस तरह से किया जा रहा है कि आज वातावरण अधिक से अधिक प्रदूषित हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप

ओजोन परत नष्ट होता जा रहा है। और दूसरा यह कि पृथ्वी के ऊपर रासायनिक गैस की एक कृत्रिम परत बनती जा रही है। ओजोन परत नष्ट होने के कारण सूर्य की अनेक घातक किरणें पृथ्वी में प्रवेष करती जा रही है और उनसे मनुष्यों को अनेक तरह से नुकसान पहुँचता जा रहा है। और रासायनिक गैस के कारण पृथ्वी पर उत्पन्न होनेवाला ताप सुदूर अंतरिक्ष में प्रवेष कर नहीं सकता जिससे पृथ्वी का ताप बढ़ता जा रहा है और पृथ्वी पर अवस्थित हिमद्रव्य पिघलता जा रहा है। इस कारण समुद्र की सतह ऊपर उठती जा रही है और बहुत से कम ऊँचाई वाले भूतल समुद्र में विलीन होते जा रहे है। यदि स्थिति यही रही तो निकट भविष्य में ही मालद्वीप तथा अन्य कम ऊँचाई वाले स्थानों को अपना अस्तित्व गँवाना पड़ सकता हैं

इस बढ़े हुए ताप को अतिषीत क्षेत्रों में विषेष प्रकार के निर्मित गृहों में संचित किया जा सकता है और उनमें हरी भरी सब्जियाँ उगाई जा सकती है। इस तरह के परिणाम को ' हरित गृह परिणाम' कहते है। इसका लाभ तो बहुत है परन्तु यदि पृथ्वी का ताप इस तरह बढ़ने के परिणामस्वरूप यदि पृथ्वी के आवासीय भू–भाग एक–एक करके समुद्र में विलिन होते गये तो संभव है भविष्य में एक दिन इस हरित गृह परिणाम का लाभ उठानेवाला कोई नहीं रह जाएगा।

प्रदूषण के प्रकार –

सिर्फ रासायनिक गैस ही नहीं बल्कि अन्य भी कई तरीके है जिनसे लगातार वातावरण प्रंदूषित हो रहा है, ये प्रदुषण के प्रकार है – ध्वनि प्रदूषण, प्लास्टिक प्रदुषण, कूड़ा प्रदूषण आदि। ध्वनि प्रदूषण के कारण तेज और अनावष्यक ध्वनि के कारण लोगों को सोने में, सोचनेमें, अपनाकाम करने में परेषानी हो रही है। अस्पताल के मरीजों के लिए विषेष रूप से हानिकारक है। प्लास्टिक थैला, प्रदूषण के जरिए तो पृथ्वी को धीरे–धीरे प्लास्टिक थैलों से पुरी तरह आच्छादित ही किया जा रहा है। इस प्रकार जल निकासी जैसी अनेक समस्याँए सामने आ रही है। इसी प्रकार कूड़ा कचरा और षौच इत्यादि के सार्वजनिक स्थान पर होने से लोगों को कितनी असहजता होती है यह कहने की आवष्यकता नहीं। गाड़ी, मोटर, फैक्ट्री इत्यादि से निकलने वाले धुएँ से वायु प्रदूषण की समस्या हो रही जिससे लोगों को साँस लेने में पेरषानी हो रही है और अनेक गंभीर बीमारियों का आर्विभाव हो रहा है। इस प्रकार के अन्य सभी प्रदूषणों का दुष्परिणाम धीरे–धीरे सामने आने लगा है। इससे बचने के लिए कई कानून भी बनाएं जा रहे है परन्तु आवष्यकता है लोगों को इसके प्रति जागरूक करने की। लोग स्वेच्छा से ही पर्यावरण सदाचार नीति को कर्तव्य मान ले और उसका उसी रूप में पालन करें। मनुष्य से ऐसी अपेक्षा रखना उसके मनुष्य होने के नाते लाजमी ही है।

पर्यावरणीय आचारनीति के संबंध में सिंगर के विचार –'

पीटर सिंगर ने अपनी पुस्तक में आंतरिक मूल्यांकन आचारनीति की बहुत चर्चा की है। वे कहते है – ''गहरे पर्यावरणषास्त्रीगण जीव जगत के सुव्यवस्थित गठन को उसके अस्तित्व की वजह से सुरक्षित रखना चाहते है, न कि इसलिए कि वैसा करने से मनुष्यों को कुछ लाभ मिल जाएगा।''

सिंगर ने पर्यावरण आचारनीति के संबंध में अपनी पुस्तक में अनेक महत्वपूर्ण सुझाव दिए है। उनके अनुसार मनुष्यों तथा पषुओं के भोजन, आवास आदि के आवष्यक एवं स्वस्थ प्रबंधन के लिए वातावरण के तत्वों का सही परिणाम में उपयोग तो करना ही चाहिए। नैतिक दृष्टि से इसे कभी अनुचित नहीं माना जा सकता। पर इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि मनुष्य अपने उपभोग के लिए पर्यावरण को नष्ट ही कर दे या प्रदूषित करे। उपभोग निष्चित रूप से चयनात्मक होना चाहिए जिससे पर्यावरण नष्ट होने या प्रदूषित होने से बच जाए। उदाहरण के लिए मनोरंजन निष्चय ही मानव जीवन के लिए अत्यंत आवष्यक है। पर कुछ मनोरंजन पर्यावरण को दूषित करते है और कुछ नहीं। हमें निष्चित रूप से वैसे मनोरंजन का चयन करना चाहिए जिससे पर्यावरण प्रदूषण से बच जाए।

सिंगर जीवन में सुख प्राप्ति के खिलाफ नहीं है। पर वे सही अर्थ में सुख प्राप्ति के लिए कुछ जरूरी हिदायतों का पालन करना भी बिल्कुल जरूरी समझते है। सिंगर कहते है –'' उस लकड़ी का प्रयोग, जो किसी वर्षावर्धक वन से ली गई है, बिल्कुल अनावष्यक है, ऐसा इसलिए कि वर्षावर्धक वन की दीर्घकालीन उपयोगिता उपर्युक्त लकड़ी के तत्कालीन उपयोगों से बहुत अधिक है। खुले मैदान में मोटरगाड़ी पर सैर करना खनिज ईंधन का दुरूपयोग करना है, क्योंकि ऐसा करने से 'सब्जगृह' परिणाम निकलता है। द्वितीय विष्वयुद्ध के समय जब पेट्रोल दुर्लभ था, तब यह प्रष्न अनेक पट्टीयों पर लिखा मिल जाता है। '' क्या आपकी यात्रा वास्तविक रूप से जरूरी है ? प्रत्यक्ष एवं निकटवर्ती संकट के विरूद्ध राष्ट्रीय स्थिरता के लिए ऐसा अनुरोध बहुत प्रभावी हुआ था। यह सही है कि हमारे वातावरण पर होने वाला खतरा निकटवर्ती नहीं है पर उसे जान पाना कठिन भी नहीं है और इसके लिए भी अनावष्यक यात्राओं और अनावष्यक उपभोगों को छोड़ देना जरूरी ही होता है।''

सिंगर कहते है –'' मितंव्ययिता तथा सरल जीवन जीने पर बल देने का अर्थ यह नहीं होता है कि पर्यावरणीय आचारनीति सुखानुभूति को निकृष्ट मानती है। यह नीति उस सुख को अधिमानित करती है जो दिखावटी उपभोग से प्राप्त नहीं किया जाता है। ऐसा सुख तो सौंहार्दपूर्ण वैयक्तिक एवं यौन संबंधों से, बच्चों तथा मित्रों के निकट सम्पर्क से, वार्तालाप से, वैसे खेतो और मनोरंजनों से जो हमारे वातावरण के अनुकूल हो, प्रतिकूल नहीं, ऐसे भोजन से जो प्राणियों के विनाष पर आधारित न हो और जो पृथ्वी को कोई नुकसान न पहुँचाता हो, जो सभी प्रकार के सृजनात्मक कार्यो से इस बात का ख्याल रखते हुए कि हमारी आवास स्थली इस दुनियाँ का कोई मूल्यवान पदार्थ नष्ट ना हो जाए संपादित किए जाए और जो इसके अक्षत स्थानों की प्रषंसा से प्राप्त होता है।''

अंत में हम पर्यावरणीय आचारनीति के संबंध में एक बात पर विषेष जोर देना चाहते है कि हमे पर्यावरण के किसी अंग का साधन के रूप में उसी हद तक उपयोग करना चाहिए जिस हद तक उसके उपयोग से उसे हानि ना हो और प्रदूषण नियंत्रित हो। पर्यावरण का केवल उपयोगिता मूल्य ही नहीं होता, उसका अपना आंतरिक मूल्य भी होता है और निष्चित रूप से आंतरिक मूल्य को ही अधिमानित करना चाहिए।

संदर्भ सूची –:

1. डॉ0 रामेन्द्र, अधिनीतिषास्त्र एवं व्यावहारिक नीतिषास्त्र, भाग–2, अध्याय–17, पृष्ट संख्या–216–222.
2. एम0पी0 चौरसिया, अनुप्रयुक्त नीतिषास्त्र, अध्याय–15, पृष्ट संख्या–283–305.
3. प्रे0 नित्यानंद मिश्र, नीतिषास्त्र : सिद्वान्त और व्यवहार , खण्ड–प्ट, अध्याय–33, पृष्ट संख्या –535–547.
4. पिटर सिंगर, प्रैक्टिकल एथिक्स, कैम्ब्रिज यूनिवर्सीटी प्रेस ए 2000ए च्19ए 278ए 280ए 285ए 287
5. व्ए छमपससण श्रणए म्बवसवहलए च्वसपबल ंदक च्वसपजपबेरू भ्नउंद ॅमसस.इमपदह ंदक जीम छंजनतंस ॅवतसकए 193ण्
6. श्३ण जीम बसंपउे उवकम इवनज वइसपहंजपवदे जव चममेमतअम ंदक तमतजवतम दंजनतम ंदूमत इंबा जव जीम बसंपउ जींज ॅपसक दंजनतम ीं पदजतपदेपब टंसनमण त्वइमतज म्सपवजए थंपदह छंजनतमए च्1ए ंसेव ैमब च्ैपदहमत इववाए ।दपउंस स्पइमतंजपवदरू । छमू म्जीपबे वित वनत जतमंजउमदज व ि।दपउंसेए 1976ण्
7. च्मजमत ैपदहमतए च्तंबजपबंस मजीपमेए चच216.17ण्